नईदुनिया | अपना शहर
इंदौर, गुरुवार 02 जून 2016

रशियन वाइफ स्कैम - लोग कैसे आसानी से बन जाते हैं शिकार

इन बातों का रखें खास ध्यान

- रशियन वाइफ स्कैम में अधेड़ उम्र के पुरुषों को निशाना बनाया जाता है
- अपराधी महिला बनकर दोस्ती गांठते हैं और रुपए ठगते हैं
- जानिए आप भी कैसे कर सकते हैं इनकी पहचान
- बचने के सबसे बढ़िया तरीका, ऑनलाइन ऐसे संपर्क न बनाएं

वरुण कपूर
आईपीएस

संबंधों की आड़ में गंभीर अपराधों को अंजाम देना और भोले-भाले लोगों को नुकसान पहुंचाना सायबर वर्ल्ड में आम होता जा रहा है। इसका खौफ इतना बढ़ गया है कि किससे दोस्ती करें और किससे नहीं, यह तय करना चुनौती बनता जा रहा है।

इस तरह के अपराध में ऐसी महिलाओं और पुरुषों को निशाना बनाया जा रहा है जो ऑनलाइन जाकर लॉन्ग टर्म या शॉर्ट टर्म रिलेशनशिप तलाशते हैं। थोड़े समय के लिए किसी से दोस्ती करना चाह रहे अधेड़ उम्र के मर्दों को खासतौर पर टारगेट किया जाता है। इस स्थिति को तकनीकी भाषा में 'रशियन वाइफ स्कैम' कहा जाता है। सोशल इंजीनियरिंग तकनीक के जरिए अपराधी जिस शख्स को निशाना बनाना चाहते हैं, उसकी उम्र पता लगा लेते हैं। व्यक्ति द्वारा सोशल मीडिया पर की गईं पोस्ट से भी उसके बारे में अंदाज लगाया जा सकता है। अपराधी यह भी देख लेते हैं कि इंटरनेट यूसेज पैटर्न (एडल्ट और पॉर्न साइट) कैसा है? इससे अपराधियों को विश्वास हो जाता है कि यूजर अधेड़ उम्र का है और उसे आसानी से निशाना बनाया जा सकता है।

इस तरह सबसे पहले टारगेट की पहचान की जाती है। इसके बाद उसे दोस्ती का ऑफर करता हुआ फर्जी ईमेल भेजा जाता है। ईमेल में अपराधी खुद को रूस, यूक्रेन, ब्रसेल्स जैसे किसी पश्चिमी देश की महिला बताता है। यही कारण है कि ऐसे धोखों को रशियन वाइफ स्कैम नाम दिया गया है। जिस शख्स को निशाना बनाया जाता है वह अमूमन शादीशुदा होता है। कम से कम उसकी उम्र देखकर तो यही अंदाज लगता है। अपराधी एक बार में ऐसे कई लोगों को टारगेट बनाने की कोशिश करते हैं। इसके लिए वे क्लासिक फिशिंग अटैक प्रोसिजर का इस्तेमाल करते हैं। सभी लोग अपराधियों के चंगुल में नहीं फंसते, लेकिन कुछ तो जरूर फंस जाते हैं। यहां से अपराध दूसरे चरण में प्रवेश करता है। जो लोग दोस्ती का ऑफर स्वीकार कर लेते हैं, उनसे लगातार बात की जाती है। यह दौर छह माह तक चलता है। इस तरह अपराधी अपने शिकार का भरोसा जीतने कामयाब रहता है। जो ईमेल शुरुआती दौर में औपचारिक थे, वे अनौपचारिक और फिर बेहद निजी हो जाते हैं। अपराधी द्वारा भेजे जा रहे फोटो शुरू में शालीन होते हैं। फिर ये निजी होते हुए उत्तेजक हो जाते हैं। इस तरह जाल बिछ चुका है। शिकार भी लगभग फंस ही चुका है।

अब अपराधी एक कदम आगे बढ़ता है और पीड़ित को मिलने का प्रस्ताव देता है। पीड़ित को रूस आने के लिए कहा जाता है, जिससे वह इनकार कर देता है। इसके बाद सामने वाली 'महिला' भारत आने का प्रस्ताव रखती है। तारीख तय हो जाती है। इधर, पीड़ित बहुत खुश है। जैसे-जैसे घड़ी करीब आ रही है, वह अपनी ऑनलाइन दोस्त से मिलने के लिएं उतावला हो रहा है। तभी एक गडबड़ हो जाती है। महिला का ईमेल आता है कि उसे कुछ पैसों की जरूरत है। इसके लिए कर्ज चुकाने, दूतावास में सुरक्षा निधि जमा करने, अचानक बीमार पड़ने, एक्सिडेंट होने जैसे बहाने बनाए जाते हैं। महिला पीड़ित से कहती है कि वह उसके खाते में पैसे ट्रांसफर कर दे। वह वादा करती है कि भारत की जमीं पर कदम रखते ही वह पैसा लौटा देगी। पूरी साजिश से बेखबर बड़े दिल वाला पीड़ित खुशी-खुशी राशि ट्रांसफर कर देता है। इसके साथ ही अपराध को अंजाम दे दिया गया। जरूरत पड़ी तो इसके बाद भी महिला एक के बाद एक बहाने बनाकर पीड़ित को बहकाती रहेगी, जब तक कि उसे सधाई का पता न लग जाए। जब तक पीड़ित को पता चलता कि महीनों से वो जिससे बातें कर रहा था, वो कोई महिला नहीं सायबर अपराधी था, तो उससे होश फाख्ता हो जाते हैं।

इतनी बुरी तरह धोखा खाने के बाद पीड़ित क्या कर सकता है? क्या वो पुलिस के पास जाएगा? हो सकता है ऐसा न करे। यदि वह शादीशुदा है तो आप कल्पना कर सकते हैं कि उसकी पत्नी की प्रतिक्रिया कैसी होगी? यदि वह अपनी आवाज बुलंद करने का साहस रखता है तो थोड़े ही सही पर चांस जरूर है कि उसे राशि वापस मिल जाए।

कुछ सुरक्षा मापदंड हैं, जिन्हें अपनाकर ऐसे स्कैम का पता लगाया जा सकता है। इनकी मदद से व्यक्ति खुद को भी बचा सकता है। कुछ संकेत हैं, जिन्हें वक्त रहते भांप लिया जाए तो बचा सकता है। मसलन- महिला आपको आगे रहकर संपर्क करती है। वो कहती है, ऑनलाइन रोमांस का यह उसका पहला मौका है। वह बहुत सच्ची है और झूठ-फरेब से घृणा करती है। वो हर ईमेल के साथ अपना एक फोटो भेजती है। कुछ फोटो ऐसे होते हैं कि सामने वाला शख्स फ्लैट हो जाता है। उसके ईमेल में पीड़ित का नाम अन्य शब्दों से अलग तरह से लिखा होगा। कभी-कभी वो आपके पूछे सवालों के जवाब नहीं देगी, आदि-आदि।

इन बातों का रखें ध्यान

यदि कोई आपसे ईमेल पर इस तरह बात कर रहा है तो उससे तुरंत नाता तोड़ लीजिए। बहरहाल, सबसे बड़ी बात यह है कि आप सायबर स्पेस में अज्ञात लोगों से किसी तरह का रिश्ता न रखें। चूंकि वह शख्स सशरीर आपके सामने मौजूद नहीं रहता है, इसलिए वह भला है या बुरा, कहना संभव नहीं है। हम यह भी नहीं भांप पाते हैं कि उसके दिमाग में क्या चल रहा है। ऐसी स्थिति में भला तो इसी में है कि जब तक आप किसी इंसान को असल जिंदगी में नहीं जानते हैं, वर्चुअल वर्ल्ड में उससे दूरी ही बनाए रखें। इस पर भी यदि ऑनलाइन संपर्क बनाए रखना हैं तो ऐसे व्यक्ति के साथ किसी तरह का लेन-देन न करें। उसके खाते में पैसे तो कभी ट्रांसफर न करें।

(लेखक अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक पद पर इंदौर में पदस्थ हैं और विचार उनके व्यक्तिगत हैं)
ईमेल: varunkapoor170@gmail.com